कक्षा **5** के लिए अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम पर निबंध

अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम

भारत ने अंतरिक्ष विज्ञान में अपने प्रयासों से दुनिया में एक नई पहचान बनाई है. 1969 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) की स्थापना के साथ इस यात्रा की शुरुआत हुई. शुरुआत में भारत के पास सीमित साधन थे, लेकिन दृढ़ता और मेहनत से बड़ी उपलब्धियां हासिल की गईं.

भारत का पहला उपग्रह, आर्यभट्ट, 1975 में सोवियत संघ की मदद से अंतरिक्ष में भेजा गया. इसके बाद 1980 में भारत ने अपने पहले स्वदेशी रॉकेट SLV-3 से रोहिणी उपग्रह लॉन्च किया. 2008 में चंद्रयान-1 ने चंद्रमा पर पानी के अंश खोजकर दुनिया को चौंका दिया. चंद्रयान-2 ने चंद्रमा की सतह पर उतरने की कोशिश की, जो पूरी तरह सफल नहीं रही, लेकिन मिशन ने महत्त्वपूर्ण डेटा एकत्र किया. 2023 में चंद्रयान-3 ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग की, जिससे भारत इस उपलब्धि को हासिल करने वाला पहला देश बन गया.

भारत का मंगल अभियान, मंगलयान (2013), कम लागत में सफल रहा और भारत पहली बार में ही इस मिशन को पूरा करने वाला पहला देश बना. यह पूरी दुनिया के लिए एक उदाहरण बन गया. अब भारत मानवयुक्त अंतरिक्ष अभियान, गगनयान, की तैयारी कर रहा है, जिसमें भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को पृथ्वी की कक्षा में भेजा जाएगा. इसके साथ ही सूर्ययान (आदित्य-L1) सूरज के अध्ययन के लिए लॉन्च किया गया है.

ISRO ने इन उपलब्धियों से यह साबित किया है कि सीमित संसाधनों में भी असंभव को संभव बनाया जा सकता है. अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम न केवल विज्ञान के क्षेत्र में देश का नाम ऊंचा कर रहे हैं, बल्कि लाखों युवाओं को भी प्रेरणा दे रहे हैं.

भारत ने अंतरिक्ष विज्ञान के जरिए नई ऊंचाइयों को छूते हुए पूरी दुनिया को यह संदेश दिया है कि सच्चे प्रयासों और लगन से कोई भी सीमा बाधा नहीं बन सकती. अंतरिक्ष की यह यात्रा भविष्य में और भी बड़े आयाम छूने को तैयार है.